IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पारंपरिक ज्ञान परंपरा में नवाचार

प्रो. सिद्धार्थ शङ्कर सिंह,
प्राचार्य,
पृथ्वी चन्द महाविद्यालय, छपरा

शोध - सारांश

नमामि कमलाम् अमलां अतुलां सुजलां सुफलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्

"पारंपरिक ज्ञान परंपरा में नवाचार" में भारतीय परंपरागत ज्ञान प्रणालियों एवं उनमें नवाचार की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि पारंपरिक ज्ञान केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी उपयोगी, सजीव और अनुकूल संसाधन है।

कूटशब्द

पारंपरिक ज्ञान, परंपरा (Tradition), नवाचार (Innovation), भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System)

भूमिका

भारतीय सभ्यता की जड़ें उसकी समृद्ध पारंपरिक ज्ञान परंपरा में निहित हैं, जो सहस्राब्दियों से लोक जीवन, प्रकृति और संस्कृति के मध्य संतुलन बनाए रखने में सहायक रही है। चाहे वह आयुर्वेद हो, योग, लोककला, कृषि पद्धतियाँ या सामाजिक आचार-विचार-इन सभी क्षेत्रों में पारंपरिक ज्ञान का गहरा प्रभाव रहा है। यह ज्ञान
पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक, व्यवहारिक या सांस्कृतिक रूप में संचित होता आया है।

"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।"1

कुछ प्रसिद्ध सूक्तियां:

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। (अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्"2

"यह पृथ्वी एक परिवार है।" यह वाक्यांश भारतीय संस्कृति की मूल भावना को दर्शाता है, जो सहिष्णुता, भाईचारे और वैश्विक एकता पर जोर देती है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ।"3"सभी सुखी हों, सभी स्वस्थ हों।" यह श्लोक, जो 'सर्वे सन्तु निरामया' के साथ मिलकर आता है, विश्व कल्याण की कामना करता है और सभी के लिए सुख और शांति की इच्छा रखता है।

"अतिथि देवो भवः"4

"अतिथि भगवान के समान है।" यह पंक्ति भारतीय संस्कृति में मेहमानों के प्रति सम्मान और आतिथ्य सत्कार की भावना को दर्शाती है।

"सत्यमेव जयते नानृतम सत्येन पंथा विततो देवयानः येनाक्रमंत्यृषयो ह्याप्तकामो यत्र तत् सत्यस्य परमम् निधानम्॥"5 "सत्य की ही विजय होती है।" यह प्रसिद्ध वाक्य भारत के राजचिह्न का भी हिस्सा है और सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने के महत्व को दर्शाता है।

"धर्मेण हन्यते व्याधिः हन्यन्ते वै तथा ग्रहाः । धर्मेण हन्यते शत्रुः यतो धर्मस्ततो जयः"6

"जहां धर्म है, वहां विजय है।" यह श्लोक धर्म और न्याय के मार्ग पर चलने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" 7 "कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, फल की चिंता कभी मत करो।" यह भगवत गीता का प्रसिद्ध श्लोक है, जो कर्मयोग और फल की आसक्ति से मुक्ति के महत्व को बताता है।

"सं गच्छध्वम् सं वदध्वम्।।"8

"साथ चलो, साथ बोलो।" यह ऋग्वेद का एक श्लोक है, जो एकता और सहयोग के महत्व को दर्शाता है।

शोध- उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों में निहित नवाचारों की भूमिका का विश्लेषण करना तथा आधुनिक संदर्भों में उनके संभावित उपयोग और अनुकूलन की संभावनाओं का परीक्षण करना है। पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की संरचना और प्रकृति को समझना है। उनमें निहित नवाचार के ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरणों का अध्ययन करना। इन प्रणालियों की वर्तमान समाज में प्रासंगिकता को रेखांकित करना। नवाचार के माध्यम से इन प्रणालियों को कैसे पुनर्जीवित और उपयोग में लाया जा सकता है, इसका मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न (Research Questions):

पारंपरिक ज्ञान परंपरा में समृद्ध अनुभव और व्यावहारिकता निहित होने के बावजूद, आधुनिक समाज में इसे अक्सर अप्रासंगिक या अंधविश्वास से जोड़कर नजरअंदाज किया जाता है। इसके संरक्षण, दस्तावेजीकरण और नवाचार की दिशा में न तो पर्याप्त नीतिगत प्रयास हुए हैं और न ही शैक्षिक व वैज्ञानिक स्तर पर इसे उचित स्थान मिला है।

पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक समाज में अप्रासंगिक या अंधविश्वास से जोड़कर देखने के क्या प्रमुख कारण हैं? इन ज्ञान परंपराओं के संरक्षण, दस्तावेजीकरण एवं नवाचार के क्षेत्र में अब तक कौन-कौन सी नीतिगत एवं शैक्षिक पहलें की गई हैं और उनमें क्या कमियाँ हैं? पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार से कैसे जोड़ा जा सकता है ताकि वह आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल बन सके? इन प्रणालियों को शिक्षा प्रणाली एवं शोध-अनुसंधान के मुख्यधारा में लाने के लिए किन रणनीतियों की आवश्यकता है? क्या पारंपरिक ज्ञान पर आधारित नवाचार सामाजिक-आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान दे सकते हैं? यदि हाँ, तो कैसे?

भारतीय ज्ञान प्रणाली

भारतीय परंपरागत ज्ञान प्रणालियाँ हजारों वर्षों के अनुभव, परीक्षण और सामाजिक सहभागिता पर आधारित हैं। इनमें आयुर्वेद, योग, सिद्ध, यूनानी चिकित्सा, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ, हस्तशिल्प, लोककलाएँ, जल संरक्षण तकनीकें, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन की विधियाँ आदि आदि शामिल हैं।

पारंपरिक ज्ञान - पारंपरिक ज्ञान (Traditional Knowledge) की परिधि बहुत व्यापक है और उसमें वेद, उपनिषद, स्मृति-शास्त्र, पुराण, धर्मशास्त्र, शिल्पशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, योग, लोकज्ञान, लोककथाएँ, तथा स्थानीय समुदायों का व्यवहारिक ज्ञान आदि सभी आते हैं।

वेद - वेद भारतीय परंपरागत ज्ञान परंपरा का मूल आधार हैं। इनमें:

ऋग्वेद - प्राकृतिक विज्ञान, खगोल, देवताओं की स्तुति।

यजुर्वेद - यज्ञ विधियाँ, समाज व्यवस्था।

सामवेद संगीत, छंद, ध्यानात्मक ज्ञान।

अथर्ववेद चिकित्सा, औषधि, तंत्र, व्यवहारिक ज्ञान।

उपनिषद और दर्शन ज्ञान, आत्मा, ब्रह्म और जीवन के तत्वों पर चिंतन, जो नवाचार के दार्शनिक आधार बन सकते हैं।

आयुर्वेद वास्त नाट्यशास्त्र संगीत कृषि शास्त्र ये सभी परंपरागत ज्ञान प्रणालियाँ हैं जिनमें अनुभवजन्य

सकते हैं।

आयुर्वेद, वास्तु, नाट्यशास्त्र, संगीत, कृषि शास्त्र ये सभी परंपरागत ज्ञान प्रणालियाँ हैं जिनमें अनुभवजन्य ज्ञान और व्यावहारिकता निहित है।

नवाचार - :

आज वेदों में वर्णित ध्वनि और स्पंदन सिद्धांत को न्यूरोसाइंस और साउंड थेरेपी से जोड़ा जा रहा है। आयुर्वेदिक सूत्रों पर आधारित नई औषधियाँ विकसित की जा रही हैं। शिल्पशास्त्र और वास्तुशास्त्र के सिद्धांत पर्यावरणीय निर्माण के लिए उपयोग किए जा रहे हैं। गायन और सामवेद की ध्वनि-रचना आज म्यूजिक थेरेपी में शोध का विषय बन रही है। ये ज्ञान प्रणालियाँ केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान की समस्याओं के समाधान और भविष्य के लिए नवीन दिशा देने वाली सशक्त साधन भी बन सकती हैं यदि उनमें नवाचार का समावेश किया जाए। इसमें निम्न बिंदुओं को केंद्र में रखा गया है:

1. पारंपरिक ज्ञान की प्रकृति अनुभवजन्य, पर्यावरण-संलग्न, सामुदायिक।

2. नवाचार की आवश्यकता- - आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाए रखने हेतु नवप्रवर्तन और तकनीकी समायोजन आवश्यक हैं।

3. नवाचार के उदाहरण जैसे पारंपरिक औषधियों को आधुनिक दवा उद्योग में विकसित करना, या लोककला को डिज़ाइन उद्योग से जोड़ना।

4. चुनौतियाँ - वैज्ञानिक मान्यता की कमी, दस्तावेजीकरण का अभाव, नीति एवं वित्तीय सहयोग की कमी।

5. संभावनाएँ - सतत विकास, आत्मनिर्भरता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल, जैव विविधता संरक्षण।

भारतीय सभ्यता की जड़ें उसकी समृद्ध पारंपरिक ज्ञान परंपरा में निहित हैं, जिसे संस्कृत भाषा ने न केवल अभिव्यक्त किया, बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित और संवर्धित भी किया। संस्कृत को "भारतीय परंपरागत ज्ञान की वाहिका" (Vehicle of Traditional Knowledge) कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संस्कृत और पारंपरिक ज्ञान परंपरा के मध्य संबंध:

1. ज्ञान का मूल स्रोत- वेद एवं शास्त्र:

वेदा: शाश्वतम् ज्ञानम्।

चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) संस्कृत में ही रचित हैं।

उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति-शास्त्र, आयुर्वेद, नाट्यशास्त्र, योगसूत्र सभी ग्रंथ पारंपरिक ज्ञान के विविध आयामों को संस्कृत भाषा में समाहित करते हैं।

2. संस्कृत - सजीव परंपरा की संवाहिका:

संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, अपितु एक संस्कारजन्य जीवन प्रणाली है जिसमें ज्ञान, नीति, विज्ञान और भावनात्मक संतुलन समाहित है। "सा विद्या या विमुक्तये" यह ज्ञान वही है जो मुक्त करता है - यही दृष्टिकोण संस्कृत साहित्य का मूल है।

3. लोक जीवन और संस्कृति में अनुप्रयोग:

संस्कृत श्लोक, सुभाषित, मंत्र, नाट्य, गीत, नृत्य, कर्मकांड लोक जीवन में संस्कृत की उपस्थिति ने परंपरागत ज्ञान को सजीव बनाए रखा है।

"मनसा सततं स्मरणीयम्, वचसा सततं वदनीयम्। लोकहितं मम करणीयम्, लोकहितं मम करणीयम्।।"9 लोककल्याण की भावना संस्कृत की शिक्षा व्यवस्था की आत्मा रही है। इस प्रकार, यह विश्लेषण दर्शाता है कि यदि पारंपरिक ज्ञान को नवाचार की दृष्टि से पुनर्व्याख्यायित किया जाए, तो वह आधुनिक समाज के लिए अमूल्य स्रोत बन सकता है।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली केवल शास्त्रों में सीमित नहीं रही, बल्कि यह जीवन के हर पहलू में व्यावहारिक रूप से रची-बसी रही है। आयुर्वेद, योग, लोककला, कृषि और सामाजिक व्यवहार-ये सभी क्षेत्र उस ज्ञान की जीवंत अभिव्यक्ति हैं, जिसे न पुस्तकों से, बल्कि अनुभव, परंपरा और अभ्यास से सीखा और आगे बढ़ाया गया।

आयुर्वेद और योग: आयुर्वेद न केवल चिकित्सा पद्धति है, बल्कि यह प्रकृति के साथ शरीर और मन के के संतुलन की परंपरा है। योग शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि का मार्ग है, जिसकी जड़ें प्राचीनतम उपनिषदों व पतंजलि योगसूत्रों में मिलती हैं।

ये दोनों विद्याएँ मौखिक गुरुकुल परंपरा और व्यवहारिक अभ्यास द्वारा संचित होती आई हैं।

लोककला और संस्कृति: लोककला में चित्रकला, हस्तशिल्प, लोकगीत, नृत्य आदि शामिल हैं जो समाज की सामूहिक चेतना और अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैं।

इन कलाओं को माताएँ, दादियाँ, कारीगर और लोकगायक बिना लिखे अगली पीढ़ी को सिखाते रहे हैं - यही मौखिक परंपरा की शक्ति है।

कृषि पद्धतियाँ और सामाजिक व्यवहार:

ऋतुओं के अनुसार पारंपरिक बीज संरक्षण, गोबर-नीम आधारित जैविक खाद ये सभी अनुभव-आधारित कृषि ज्ञान के उदाहरण हैं।

सामाजिक आचार जैसे अतिथि सत्कार, पर्व-त्योहारों की परंपरा, पर्यावरण से जुड़ा आचरण - सब पारंपरिक ज्ञान से जुड़े हैं। हैं।

संवहन के माध्यम: यह ज्ञान न तो केवल लिपिबद्ध था और न ही औपचारिक शिक्षा से से जुड़ा -यह लोकगीतों में, रीति-रिवाजों में, जीवन की लय और कर्म में जीवित रहा।

इसे श्रुति (सुनकर), स्मृति (याद करके), और अनुष्ठान (प्रयोग करके) के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाया गया। पारंपरिक ज्ञान कोई निष्क्रिय विरासत नहीं, बल्कि वह सामूहिक सामाजिक अनुभव और अभ्यास का सतत प्रवाह है, जो आज भी गाँवों, परिवारों, लोकजीवन और परंपराओं में जीवित है।

"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।"10

यह भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय (ज्ञानकर्मसंन्यास योग) का श्लोक संख्या 38 है।

सरल भावार्थ:- "इस संसार में ज्ञान के समान कोई भी पवित्र वस्तु नहीं है। योग में सिद्ध हुआ व्यक्ति उस ज्ञान को कालान्तर में अपने आत्मा में स्वयं प्राप्त करता है।"

1. पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की संरचना और प्रकृति को समझना

भारतीय परंपरागत ज्ञान प्रणालियाँ मौखिक परंपरा, अनुभवनिष्ठता और सांस्कृतिक गहराई से निर्मित होती हैं।

उटाइराण के लिए आरार्केट में पंचमहाभूत सिद्धांत शरीर प्रकृति और पर्यावरण के अंतर्संबंध को दर्शाता है।

1. पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की संरचना और प्रकृति को समझना

भारतीय परंपरागत ज्ञान प्रणालियाँ मौखिक परंपरा, अनुभवनिष्ठता और सांस्कृतिक गहराई से निर्मित होती हैं।

उदाहरण के लिए: आयुर्वेद में पंचमहाभूत सिद्धांत शरीर-प्रकृति और पर्यावरण के अंतर्संबंध को दर्शाता है।

योग की आठ अवस्थाएँ (अष्टांग योग) शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक संतुलन की समग्र दृष्टि देती हैं। इनसे स्पष्ट होता है कि पारंपरिक ज्ञान की संरचना केवल तकनीकी नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि आधारित है।

2. इनमें निहित नवाचार के ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरणों का अध्ययन करना

पारंपरिक ज्ञान स्थिर नहीं रहा; उसने समय के साथ नए संदर्भों में नवाचार किया है।

इतिहास में: चरक और सुश्रुत द्वारा औषधियों एवं शल्यचिकित्सा में नवाचार।

चरक संहिता में कई श्लोक हैं, जिनमें से कुछ प्रसिद्ध हैं:

"**रोगस्तु दुःखसंयोगो देहेंद्रियमनः समाधिः**" रोग, दुःख का संयोग है और यह शरीर, इंद्रियों, और मन की समाधि को भंग करता है।

"**स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनं च**" स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के विकारों को शांत करना।

वर्तमान में: आयुर्वेदिक दवाओं का आधुनिक फार्म में उत्पादन (जैसे च्यवनप्राश, अश्वगंधा कैप्सूल)।

खेती में: ज़ीरो बजट खेती, जैविक खाद, पारंपरिक बीजों की वापसी नवाचार के समकालीन उदाहरण हैं। इससे सिद्ध होता है कि परंपरागत ज्ञान में नवाचार की अंतर्निहित क्षमता है।

3. प्रणालियों की वर्तमान समाज में प्रासंगिकता को रेखांकित करना

आज जब मानवता जलवायु संकट, मानसिक तनाव, और स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रही है, पारंपरिक ज्ञान विकल्प नहीं बल्कि समाधान प्रस्तुत करता है:

योग व प्राणायाम कोविड काल में मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए।

पारंपरिक जल संचयन (जैसे राजस्थान का खादीन या जौहर) आज जल संकट समाधान में उपयोगी माने जा रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह ज्ञान केवल अतीत की बात नहीं, बल्कि आज की आवश्यकता भी है।

4. नवाचार के माध्यम से इन प्रणालियों को कैसे पुनर्जीवित और उपयोग में लाया जा सकता है, इसका मूल्यांकन करना-

शिक्षा में: नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पारंपरिक ज्ञान को पाठ्यक्रम में स्थान देने की दिशा में कदम है।

प्रौद्योगिकी में: लोककला डिज़ाइन को डिजिटल प्लेटफार्मों से जोड़ना।

नीति में: 'सतत विकास लक्ष्य' (SDGs) में जैव विविधता व परंपरागत कृषि का महत्त्व बढ़ रहा है।

व्यवसाय में: AYUSH, आर्ट एंड क्राफ्ट आधारित स्टार्टअप्स पारंपरिक ज्ञान आधारित नवाचार के जीवंत उदाहरण हैं।

पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक समाज में अप्रासंगिक या अंधविश्वास से जोड़कर देखने के क्या प्रमुख कारण -

औपनिवेशिक प्रभाव: ब्रिटिश शासन के दौरान पारंपरिक ज्ञान को "पिछड़ा" और "अवैज्ञानिक" करार देकर औपचारिक शिक्षा से बाहर कर दिया गया।पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक समाज में अप्रासंगिक या अंधविश्वास से जोड़कर देखने के क्या प्रमुख कारण -

औपनिवेशिक प्रभाव: ब्रिटिश शासन के दौरान पारंपरिक ज्ञान को "पिछड़ा" और "अवैज्ञानिक" करार देकर औपचारिक शिक्षा से बाहर कर दिया गया।

पश्चिमी वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रभुत्व: आधुनिक विज्ञान ने मात्र प्रयोगशाला आधारित प्रमाणों को मान्यता दी, जिससे अनुभवजन्य एवं सांस्कृतिक ज्ञान को "अवैध" समझा गया।

दस्तावेजीकरण की कमी: लोक परंपराओं में प्रचलित ज्ञान मौखिक और व्यवहारिक रहा है, जिससे उसका संरक्षित रूप सामने नहीं आ सका।

शहरीकरण और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण: पारंपरिक तरीकों को "पुराने ज़माने की बातें" मानकर आधुनिक जीवनशैली ने उन्हें हाशिये पर डाल दिया।

2. इन ज्ञान परंपराओं के संरक्षण, दस्तावेजीकरण एवं नवाचार के क्षेत्र में अब तक नीतिगत एवं शैक्षिक पहलें - मुख्य पहलें:

नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन (NIF): स्थानीय ज्ञान और नवाचार को पहचान देने हेतु।

AYUSH मंत्रालय: आयुर्वेद, योग, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी के पुनरुद्धार हेतु।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP): भारतीय ज्ञान प्रणाली को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात।

TKDL (Traditional Knowledge Digital Library): पारंपरिक औषधीय ज्ञान का डिजिटलीकरण।

3. पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार से जोड़ने जा सकता है ताकि वह आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल बन सके

पुनर्परीक्षण और परीक्षण: पारंपरिक तकनीकों का वैज्ञानिक रीति से परीक्षण और प्रमाणीकरण किया जाए।

इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च: आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान के बीच संवाद स्थापित किया जाए।

प्रौद्योगिकी का उपयोग: परंपरागत विधियों को नई तकनीक से जोड़कर व्यावसायिक स्तर पर लाना जैसे जैविक खेती में ड्रोन आधारित निगरानी।

डिजिटल प्लेटफार्मों पर प्रस्तुतिकरण: पारंपरिक ज्ञान को ऐप, वेबसाइट, वीडियो जैसे आधुनिक माध्यमों से लोगों तक पहुँचाना।

4. प्रणालियों को शिक्षा प्रणाली एवं शोध-अनुसंधान की मुख्यधारा में लाने के लिए रणनीति

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) केंद्रों की स्थापना: विश्वविद्यालयों में शोध हेतु समर्पित इकाइयाँ।

पाठ्यक्रम पुनर्निर्माण: स्कूल और कॉलेज स्तर पर भारतीय परंपरागत ज्ञान से संबंधित विषयों को शामिल करना।

विद्वानों और कारीगरों का समावेश: व्यावहारिक अनुभव रखने वाले विशेषज्ञों को अकादमिक संस्थानों से जोड़ा जाए।

अनुदान व शोध प्रोत्साहन: इन विषयों पर कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिए विशेष फेलोशिप्स।

अंतर्राष्ट्रीय संवाद: वैश्विक शोध संस्थानों से समन्वय द्वारा ज्ञान आदान-प्रदान ।

5. पारंपरिक ज्ञान पर आधारित नवाचार सामाजिक-आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान दे सकते हैं।

सामाजिक योगदान:

स्थानीय संसाधनों पर आधारित तकनीकें आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती हैं।

पारंपरिक हस्तशिल्प और लोककलाएँ आजीविका का स्रोत बन सकती हैं।

समुदायों के अंदर सांस्कृतिक गौरव और पहचान की भावना जागृत होती है।

आर्थिक योगदान:

जैविक उत्पादों की वैश्विक माँग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है।

आयुर्वेद, योग और हर्बल उत्पादों पर आधारित स्टार्टअप्स रोजगार उत्पन्न करते हैं।

आर्थिक योगदान:

जैविक उत्पादों की वैश्विक माँग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है।

आयुर्वेद, योग और हर्बल उत्पादों पर आधारित स्टार्टअप्स रोजगार उत्पन्न करते हैं।

▸ पर्यावरणीय स्थिरता:

पारंपरिक कृषि और जल-संरक्षण विधियाँ पर्यावरण के अनुरूप होती हैं।

रासायनिक मुक्त जीवनशैली को प्रोत्साहित कर प्रदूषण में कमी लाती हैं।

उदाहरण:

राजस्थान की खेत तालाब प्रणाली, उत्तराखंड की बारहमासी खेती, नागालैंड की झूम कृषि ये सभी पर्यावरण व समाज के संतुलन का प्रमाण है।

उपरोक्त विश्लेषण सिद्ध करता है कि पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को नवाचार और वैज्ञानिकता से जोड़ा जाए, तो यह केवल सांस्कृतिक गर्व का विषय नहीं बल्कि व्यावहारिक समाधान, सतत विकास और वैश्विक योगदान का आधार बन सकती है।

प्रमुख निष्कर्ष (Key Findings):

पारंपरिक ज्ञान में नवाचार की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है, जैसे-जल संचयन की पारंपरिक विधियाँ, मौसम पर आधारित खेती, नाड़ी परीक्षण आधारित चिकित्सा आदि।

इन ज्ञान प्रणालियों की उपेक्षा का मुख्य कारण है- प्रमाण आधारित विज्ञान का आग्रह और पारंपरिक विधियों का पर्याप्त वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण न होना।

यदि इन्हें स्थानीय संदर्भों में नवाचार के साथ पुनर्जीवित किया जाए, तो सतत विकास, पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक स्वावलंबन के क्षेत्र में यह अमूल्य सिद्ध हो सकते हैं।

सुझाव (Suggestions):

पारंपरिक ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।

इन पर आधारित स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन मिले।

वैज्ञानिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में इन विषयों पर शोध को बढ़ावा दिया जाए।

समुदाय-आधारित दस्तावेजीकरण और जनभागीदारी सुनिश्चित की जाए।

निष्कर्ष (Conclusion):

पारंपरिक ज्ञान केवल अतीत की स्मृति नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी उपयोगी, लचीला और नवाचारक्षम संसाधन है। इसे पुनः स्थापित करने हेतु नीतिगत, शैक्षिक और सामाजिक प्रयासों की आवश्यकता है।

नवाचार एक मंजिल नहीं बल्कि एक यात्रा है, एक मानसिकता जो हमें चीजों को करने के बेहतर तरीकों की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

पारंपरिक ज्ञान में निहित अनुभवजन्य समझ को नवाचार से जोड़कर सतत विकास और सांस्कृतिक संरक्षण संभव है।

संदर्भ :-

1.श्रीमद्भगवद्गीता-4/38

2. महोपनिषद/ अध्याय 6/ श्लोक 71

3. बृहदारण्यक उपनिषद 1/4/14

4. तैत्तरीय उपनिषद, अनुवाक 11/ मन्त्र 2

5. मुण्डक उपनिषद/ 3/1/6

6. महाभारत/ स्त्री पर्व(11)

7. भगवदगीता/ अध्याय 2/ श्लोक 47

8. ऋग्वेद 10/181/2

9. संस्कृत गीत (डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर)

10. **भगवदगीता/ अध्याय 4/ श्लोक 38**

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation